एहसास की बोली

बातें नपी–तुली होती हैं पर एहसास.....
एहसास के परे होते हैं क्योंकि एहसास निश्चित नहीं होता।

फिर भी ना जाने क्यों बोल बैठी मैं इतना, देखते हैं कौन सी खबर आती है इस बार।
क्यों? क्या एहसासों को बोलने का अधिकार नहीं?

देखो तो बातों में ही तो एहसास भरे हैं।
पर सुनो तो, वही बातें नपी–तुली, भाव विहीन हो जाती हैं।

मानो जैसे काले कोट वाले ने काली स्याही से कुछ लिख दिया हो।

फिर भी ना जाने क्यों बोल बैठी में इतना, देखते हैं कौन सी खबर आती है इस बार।

एहसास की बोली मानो जैसे एक मृगतृष्णा।

बातों से भरी, किर भी एहसासों से परे।
सारे शब्द प्यासे हैं और ढूंढ रहे हैं अपने एहसासों को।

कितने पास जैसे व्योम में समाए हैं और इतनी देर जैसे खुद, खुद से ना मिल पाए हैं।

क्यों हो गई है बातें एहसासों से खाली?
शायद, इसलिए बोल बैठी में इतना.....
अब इंतजार है नपी तुली खबर का।

अपराजिता कौशिक
पीएच.डी. स्कॉलर